पश्चिम बंगाल माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (WBBSE)

कक्षा 9 हिंदी
प्रथम भाषा

अध्याय 21

प्रश्न बैंक

अध्याय 21: राजा राममोहन राय

बिरला एजुकेशन - मुफ्त नोट्स

birlaeducation.org

अध्याय 21: राजा राममोहन राय

सहायक पाठ: साहित्य संचयन

कहानी: पाठ को ऐसे याद रखो

राजा राममोहन राय का जन्म 22 मई, सन् 1772 को बंगाल के हुगली जिले के राधानगर गाँव में हुआ था। उनके पिता रामकांत राय और माता तारिणी देवी थे। बचपन से ही वे पढ़ने में तेज थे। उन्होंने संस्कृत, फारसी, अरबी और अंग्रेजी भाषाएँ सीखीं और हिंदू, इस्लाम तथा ईसाई धर्म के ग्रंथों का गहरा अध्ययन किया। अध्ययन के बाद वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सभी धर्मों में एकेश्वरवाद ही है और ईश्वर एक है।

उस समय भारतीय समाज सती प्रथा, बाल विवाह, जाति प्रथा और छुआछूत जैसी कुरीतियों से ग्रस्त था। राममोहन राय ने इन कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाई। सती प्रथा के विरुद्ध उनके लंबे संघर्ष के कारण सन् 1829 में इस प्रथा पर रोक लगी। सन् 1815 में उन्होंने आत्मीय सभा बनाई और 20 अगस्त, सन् 1828 को ब्रह्म समाज की स्थापना की, जिसमें एक ईश्वर की उपासना पर बल दिया गया।

राममोहन राय पाश्चात्य शिक्षा और अंग्रेजी शिक्षा को भारत के विकास के लिए आवश्यक मानते थे। सन् 1817 में कलकत्ता में हिंदू कॉलेज की स्थापना में उन्होंने सहयोग दिया। सन् 1821 में उन्होंने संवाद कौमुदी नामक समाचार पत्र निकाला। वे मानव मात्र की समानता और स्वतंत्रता में विश्वास करते थे। सन् 1830 में वे इंग्लैंड गए, जहाँ 27 सितंबर, सन् 1833 को ब्रिस्टल में उनका निधन हुआ। उन्हें भारतीय पुनर्जागरण का प्रभात तारा कहा जाता है।

birlaeducation.org

जीवन की प्रमुख घटनाएँ

22 मई, सन् 1772: बंगाल के हुगली जिले के राधानगर गाँव में जन्म। पिता रामकांत राय और माता तारिणी देवी।

बचपन और शिक्षा: संस्कृत, फारसी, अरबी और अंग्रेजी भाषाएँ सीखीं। हिंदू, इस्लाम और ईसाई धर्म के ग्रंथों का अध्ययन किया।

सन् 1815: कलकत्ता में आत्मीय सभा की स्थापना की, जहाँ एकेश्वरवाद पर चर्चा होती थी।

सन् 1817: कलकत्ता में हिंदू कॉलेज की स्थापना में सहयोग दिया।

सन् 1821: बंगला समाचार पत्र संवाद कौमुदी निकाला।

20 अगस्त, सन् 1828: ब्रह्म समाज की स्थापना की। एक ईश्वर की उपासना और समाज सुधार इसका उद्देश्य था।

सन् 1829: उनके लंबे संघर्ष के बाद सती प्रथा पर रोक लगी।

सन् 1830: मुगल बादशाह अकबर द्वितीय के दूत बनकर इंग्लैंड गए।

27 सितंबर, सन् 1833: इंग्लैंड के ब्रिस्टल नगर में निधन।

व्यक्तित्व परिचय

राजा राममोहन राय भारतीय पुनर्जागरण के प्रभात तारा और आधुनिक भारत के प्रणेता कहे जाते हैं। उनका जन्म सन् 1772 में राधानगर में हुआ था। उन्होंने सती प्रथा के विरुद्ध संघर्ष किया, ब्रह्म समाज की स्थापना की और स्त्री शिक्षा तथा अंग्रेजी शिक्षा का समर्थन किया। रवींद्रनाथ ठाकुर ने उन्हें भारत की आत्मा कहा था।

कठिन शब्द और उनके अर्थ

शब्द	अर्थ
प्रणेता	निर्माणकर्ता, शुरू करने वाला
सूत्रपात	आरंभ, शुरुआत
पुनर्जागरण	फिर से जागना, नया जागरण
समन्वय	तालमेल, मेल
कुरीति	बुरी प्रथा
गरिमा	सम्मान, गौरव
खंडन	गलत साबित करना
मंडन	सही साबित करना
सार	मूल तत्व, निचोड़
प्रतिबंध	रोक, मनाही
पराधीनता	गुलामी, दूसरे के अधीन रहना
निष्ठा	विश्वास, श्रद्धा

birlaeducation.org

1. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ)

1. आधुनिक भारतीय पुनर्जागरण का सूत्रपात करने वाले कौन थे?

(क) ईश्वरचंद्र विद्यासागर

(ख) राजा राममोहन राय

(ग) स्वामी दयानंद

(घ) गोपाल कृष्ण गोखले

उत्तर: (ख) राजा राममोहन राय

---

2. राजा राममोहन राय का जन्म किस सन् में हुआ था?

(क) सन् 1772

(ख) सन् 1828

(ग) सन् 1833

(घ) सन् 1817

उत्तर: (क) सन् 1772

---

3. राजा राममोहन राय का जन्म कहाँ हुआ था?

(क) कलकत्ता

(ख) राधानगर, हुगली

(ग) दिल्ली

(घ) पटना

उत्तर: (ख) राधानगर, हुगली

---

4. ब्रह्म समाज की स्थापना किस सन् में हुई?

(क) सन् 1815

(ख) सन् 1828

(ग) सन् 1829

(घ) सन् 1833

उत्तर: (ख) सन् 1828

---

5. ब्रह्म समाज की स्थापना किसने की?

(क) देवेंद्रनाथ ठाकुर

(ख) राजा राममोहन राय

(ग) केशवचंद्र सेन

(घ) ईश्वरचंद्र विद्यासागर

उत्तर: (ख) राजा राममोहन राय

birlaeducation.org

---

6. सती प्रथा पर रोक किस सन् में लगी?

(क) सन् 1817

(ख) सन् 1821

(ग) सन् 1829

(घ) सन् 1833

उत्तर: (ग) सन् 1829

---

7. राजा राममोहन राय ने कौन सा समाचार पत्र निकाला?

(क) अमृत बाजार पत्रिका

(ख) संवाद कौमुदी

(ग) हिंदू पैट्रियट

(घ) बंगदर्शन

उत्तर: (ख) संवाद कौमुदी

---

8. हिंदू कॉलेज की स्थापना किस सन् में हुई?

(क) सन् 1817

(ख) सन् 1828

(ग) सन् 1885

(घ) सन् 1830

उत्तर: (क) सन् 1817

---

9. राजा राममोहन राय किसमें विश्वास रखते थे?

(क) जाति भेद में

(ख) मानवीय स्वतंत्रता में

(ग) मूर्तिपूजा में

(घ) सती प्रथा में

उत्तर: (ख) मानवीय स्वतंत्रता में

---

10. राजा राममोहन राय के अनुसार समानता का मूल सिद्धांत क्या है?

(क) धन की समानता

(ख) मानव मात्र की समानता

(ग) जाति की समानता

(घ) धर्म की समानता

उत्तर: (ख) मानव मात्र की समानता

birlaeducation.org

---

11. राजा राममोहन राय का निधन कहाँ हुआ?

(क) कलकत्ता

(ख) दिल्ली

(ग) लंदन

(घ) ब्रिस्टल, इंग्लैंड

उत्तर: (घ) ब्रिस्टल, इंग्लैंड

---

12. रवींद्रनाथ ठाकुर ने राजा राममोहन राय के बारे में क्या कहा था?

(क) वे भारत के पहले राजा थे

(ख) उनकी आत्मा भारत की आत्मा थी

(ग) वे महान कवि थे

(घ) वे महान वैज्ञानिक थे

उत्तर: (ख) उनकी आत्मा भारत की आत्मा थी

---

2. रिक्त स्थान भरो

1. आधुनिक भारतीय पुनर्जागरण का सूत्रपात _____ ने किया था।

उत्तर: राजा राममोहन राय

---

2. राजा राममोहन राय का जन्म सन् _____ में राधानगर में हुआ था।

उत्तर: 1772

---

3. ब्रह्म समाज की स्थापना सन् _____ में हुई थी।

उत्तर: 1828

---

4. सती प्रथा पर रोक सन् _____ में लगी थी।

उत्तर: 1829

---

5. राजा राममोहन राय ने _____ नामक समाचार पत्र निकाला था।

उत्तर: संवाद कौमुदी

---

6. हिंदू कॉलेज की स्थापना सन् _____ में हुई थी।

उत्तर: 1817

---

7. राजा राममोहन राय _____ स्वतंत्रता में विश्वास रखते थे।

उत्तर: मानवीय

birlaeducation.org

---

8. राजा राममोहन राय के अनुसार समानता का मूल सिद्धांत _____ की समानता है।

उत्तर: मानव मात्र

---

9. भारत ने _____ को अपना पवित्र ग्रंथ माना है।

उत्तर: उपनिषदों

---

10. राजा राममोहन राय का निधन सन् _____ में ब्रिस्टल में हुआ था।

उत्तर: 1833

---

3. सही / गलत

1. राजा राममोहन राय सती प्रथा के समर्थक थे।

उत्तर: गलत। सही बात यह है: राजा राममोहन राय सती प्रथा के विरोधी थे और उनके संघर्ष से सन् 1829 में इस पर रोक लगी।

---

2. ब्रह्म समाज की स्थापना सन् 1828 में हुई थी।

उत्तर: सही।

---

3. राजा राममोहन राय एकेश्वरवाद में विश्वास करते थे।

उत्तर: सही।

---

4. राजा राममोहन राय ने स्त्री शिक्षा का विरोध किया था।

उत्तर: गलत। सही बात यह है: राजा राममोहन राय स्त्री शिक्षा और अंग्रेजी शिक्षा के समर्थक थे।

---

5. राजा राममोहन राय का जन्म सन् 1772 में हुआ था।

उत्तर: सही।

---

6. हिंदू कॉलेज की स्थापना सन् 1817 में हुई थी।

उत्तर: सही।

---

7. राजा राममोहन राय ने संवाद कौमुदी समाचार पत्र निकाला था।

उत्तर: सही।

---

8. राजा राममोहन राय जाति भेद को मानवता का शत्रु मानते थे।

उत्तर: सही।

birlaeducation.org

---

9. राजा राममोहन राय का निधन कलकत्ता में हुआ था।

उत्तर: गलत। सही बात यह है: राजा राममोहन राय का निधन इंग्लैंड के ब्रिस्टल नगर में हुआ था।

---

10. रवींद्रनाथ ठाकुर ने कहा था कि राममोहन राय की आत्मा भारत की आत्मा थी।

उत्तर: सही।

---

4. लघु उत्तरीय प्रश्न (SAQ)

1. आधुनिक भारतीय पुनर्जागरण का सूत्रपात करने वाले कौन थे? पाठ्यपुस्तक

आधुनिक भारतीय पुनर्जागरण का सूत्रपात करने वाले राजा राममोहन राय थे। उन्हें भारतीय पुनर्जागरण का प्रभात तारा कहा जाता है।

---

2. राजा राममोहन राय किसमें विश्वास रखते थे? पाठ्यपुस्तक

राजा राममोहन राय मानवीय स्वतंत्रता में विश्वास रखते थे। वे मानव मात्र की समानता और स्वतंत्रता के पक्षधर थे।

---

3. भारत ने किसे अपना पवित्र ग्रंथ माना? पाठ्यपुस्तक

भारत ने उपनिषदों को अपना पवित्र ग्रंथ माना है। राममोहन राय ने उपनिषदों के एकेश्वरवाद पर बल दिया था।

---

4. राजा राममोहन राय ने किन धर्मग्रंथों का अध्ययन किया? पाठ्यपुस्तक

राजा राममोहन राय ने हिंदू, इस्लाम और ईसाई धर्मग्रंथों का अध्ययन किया। अध्ययन के बाद वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सभी धर्मों में एकेश्वरवाद ही है।

---

5. राजा राममोहन राय के अनुसार सच्चा धार्मिक कौन है? पाठ्यपुस्तक

राजा राममोहन राय के अनुसार सच्चा धार्मिक वह है जो व्यक्ति अपने को परमात्मा का अंश मानता है।

---

6. राजा राममोहन राय के अनुसार समानता का मूल सिद्धांत क्या है? पाठ्यपुस्तक

राजा राममोहन राय के अनुसार समानता का मूल सिद्धांत मानव मात्र की समानता है। सब मनुष्य एक ही परमात्मा की संतान हैं।

---

7. प्राचीन काल में नारियों को कौन से अधिकार मिले हुए थे? पाठ्यपुस्तक

प्राचीन काल में नारियों को वे अधिकार मिले हुए थे जो अधिकार पुरुषों के थे। बाद में समाज में नारियों के अधिकार छिन गए।

---

8. राजा राममोहन राय हमें कौन से महान आदर्श देना चाहते थे? पाठ्यपुस्तक

राजा राममोहन राय हमें सत्य का धर्म, सामाजिक समानता और मानव मात्र की एकता का महान आदर्श देना चाहते थे।

---

9. मानव की गरिमा को कौन कम करता है? पाठ्यपुस्तक

मानव की गरिमा को अंधविश्वास, कुरीतियाँ और सामाजिक बुराइयाँ कम करती हैं।

birlaeducation.org

---

10. राजा राममोहन राय ने किन धर्मग्रंथों का अध्ययन किया तथा उन्होंने क्या पाया? पाठ्यपुस्तक

राजा राममोहन राय ने हिंदू, इस्लाम और ईसाई धर्मग्रंथों का अध्ययन किया। अध्ययन के बाद उन्होंने यह पाया कि ईश्वर में आस्था ही सभी धर्मों का सार है। सारे धर्म बताते हैं कि ईश्वर एक है और सर्वोपरि है।

---

11. राजा राममोहन राय किस स्वतंत्रता में विश्वास करते थे? पाठ्यपुस्तक

राजा राममोहन राय मानवीय स्वतंत्रता में विश्वास करते थे। उन्होंने कहा कि जो देश अपने को सत्य कहता है, उसे मानव मात्र की स्वतंत्रता और समानता में विश्वास करना चाहिए।

---

12. राजा राममोहन राय के महान आदर्श क्या थे? पाठ्यपुस्तक

सत्य का धर्म, सामाजिक समानता और मानव मात्र की एकता राजा राममोहन राय के महान आदर्श थे। लेकिन दुख की बात है कि हम आज भी इन आदर्शों से बहुत दूर हैं।

---

13. राजा राममोहन राय का संपूर्ण जीवन किन कार्यों में बीता? पाठ्यपुस्तक

राजा राममोहन राय का पूरा जीवन समानता, व्यक्ति स्वतंत्रता और मानव प्रेम के लिए संघर्ष में बीता। उन्होंने अंधविश्वासों, कुरीतियों, जातिवाद और अधिनायकवाद के विरुद्ध संघर्ष किया।

---

14. राजा राममोहन राय का जन्म कब और कहाँ हुआ था? अतिरिक्त

राजा राममोहन राय का जन्म 22 मई, सन् 1772 को बंगाल के हुगली जिले के राधानगर गाँव में हुआ था।

15. राजा राममोहन राय के माता पिता का नाम क्या था? अतिरिक्त

राजा राममोहन राय के पिता का नाम रामकांत राय और माता का नाम तारिणी देवी था।

16. ब्रह्म समाज की स्थापना कब और क्यों हुई? अतिरिक्त

ब्रह्म समाज की स्थापना 20 अगस्त, सन् 1828 को हुई थी। इसका उद्देश्य एक ईश्वर की उपासना और समाज सुधार था।

17. सती प्रथा क्या थी और इस पर रोक कब लगी? अतिरिक्त

सती प्रथा में पति की मृत्यु के बाद पत्नी को उसकी चिता पर जला दिया जाता था। राममोहन राय के लंबे संघर्ष के बाद सन् 1829 में इस प्रथा पर रोक लगी।

18. संवाद कौमुदी क्या थी? अतिरिक्त

संवाद कौमुदी राजा राममोहन राय द्वारा सन् 1821 में निकाला गया बंगला समाचार पत्र था। इसके माध्यम से वे समाज सुधार के विचार लोगों तक पहुँचाते थे।

19. राजा राममोहन राय को 'राजा' की उपाधि किसने दी? अतिरिक्त

राजा राममोहन राय को 'राजा' की उपाधि मुगल बादशाह अकबर द्वितीय ने दी थी। वे सन् 1830 में बादशाह के दूत बनकर इंग्लैंड गए थे।

birlaeducation.org

20. राजा राममोहन राय का निधन कब और कहाँ हुआ? अतिरिक्त

राजा राममोहन राय का निधन 27 सितंबर, सन् 1833 को इंग्लैंड के ब्रिस्टल नगर में हुआ था।

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (LAQ)

1. समाज सुधारक के रूप में राजा राममोहन राय का परिचय दें। पाठ्यपुस्तक

राजा राममोहन राय समाज सुधारक के रूप में विशेष रूप से याद किए जाते हैं। उस समय भारतीय समाज सती प्रथा, बाल विवाह, जाति प्रथा और अस्पृश्यता जैसी कुरीतियों से ग्रस्त था। उन्होंने इन कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाई और समाज में नवचेतना का संचार किया। सती प्रथा के विरुद्ध उनके लंबे संघर्ष के कारण सन् 1829 में इस प्रथा पर रोक लगी। उन्होंने ऊँच नीच और छुआछूत की भावना को मानवता का महान शत्रु बताया। उनके ही शब्दों में जाति भेद हमारी गुलामी का प्रमुख कारण रहा है। वे हिंदू मुस्लिम एकता को भारत की आजादी के लिए आवश्यक मानते थे। वे स्त्री शिक्षा और विधवा विवाह के भी समर्थक थे।

2. राजा राममोहन राय आधुनिक भारत के पुनर्जागरण का सूत्रपात करने वाले थे, विवेचना करें। पाठ्यपुस्तक

राजा राममोहन राय भारतीय पुनर्जागरण के प्रभात तारा थे। वे प्रतिक्रिया और प्रगति के मध्य बिंदु थे। उन्होंने अनेक भाषाएँ सीखकर विभिन्न धर्म ग्रंथों का अध्ययन किया और पाया कि सभी धर्मों में एकेश्वरवाद ही है। उन्होंने सती प्रथा, बाल विवाह और

जाति प्रथा जैसी कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष किया। उन्होंने पाश्चात्य शिक्षा और अंग्रेजी शिक्षा को भारत के विकास के लिए आवश्यक माना। हिंदू कॉलेज की स्थापना में सहयोग दिया और संवाद कौमुदी पत्र निकाला। उन्होंने सत्य का धर्म, सामाजिक समानता और मानव मात्र की एकता का आदर्श दिया। इस प्रकार उन्होंने अंधविश्वास से ग्रस्त भारतीय जनजीवन को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का कार्य किया।

---

3. राजा राममोहन राय के धर्म संबंधी विचारों को लिखें। पाठ्यपुस्तक

राजा राममोहन राय ने अनेक भाषाओं के ज्ञाता होने के कारण विभिन्न धर्म ग्रंथों का अध्ययन किया था। अध्ययन के बाद वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सभी धर्मों में एकेश्वरवाद का ही प्रचलन है। ईश्वर एक है, सर्वोपरि है और संसार का रचयिता है। उसका वर्णन अनेक रूपों में मिलता है, पर सबका सार तत्व एक है। यदि हम उस सर्वोपरि सत्य के स्वरूप को जान पाएँ तो धर्म के नाम पर कोई विवाद ही नहीं रह जाएगा। भारत ने उपनिषदों को अपना पवित्र ग्रंथ माना है। उनके अनुसार सच्चा धार्मिक वह है जो अपने को परमात्मा का अंश मानता है।

---

4. राजा राममोहन राय आधुनिक भारत के प्रणेता थे, पठित पाठ के आधार पर लिखें। पाठ्यपुस्तक

राजा राममोहन राय आधुनिक भारत के प्रणेता थे, क्योंकि उन्होंने भारतीय समाज को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का कार्य किया। उन्होंने सती प्रथा, बाल विवाह, जाति प्रथा और अस्पृश्यता के विरुद्ध संघर्ष किया। वे पाश्चात्य शिक्षा और अंग्रेजी शिक्षा को भारत के विकास के लिए आवश्यक मानते थे। सन् 1817 में हिंदू कॉलेज की स्थापना में उन्होंने सहयोग दिया। उन्होंने संवाद कौमुदी पत्र निकालकर जन जागरण का कार्य किया। ब्रह्म समाज की स्थापना करके उन्होंने एकेश्वरवाद और समाज सुधार का संदेश दिया। वे मानवीय स्वतंत्रता और मानव मात्र की समानता में विश्वास करते थे। इसलिए उन्हें आधुनिक भारत का प्रणेता कहा जाता है।

birlaeducation.org

---

5. राजा राममोहन राय मानव मात्र की समानता चाहते थे, संकलित पाठ के आधार पर लिखें। पाठ्यपुस्तक

राजा राममोहन राय मानव मात्र की समानता चाहते थे। उनके अनुसार समानता का मूल सिद्धांत मानव मात्र की समानता है। वे कहते थे कि जाति भेद, जिससे हिंदू समाज अनेक जाति उपजाति में बँट गया है, हमारी गुलामी का प्रमुख कारण रहा है। एकता के अभाव में ही हम दासता की जंजीर में जकड़े रहे। उन्होंने ऊँच नीच और छुआछूत की भावना को मानवता का महान शत्रु बताया। प्राचीन काल में नारियों को वे अधिकार मिले हुए थे जो पुरुषों के थे, पर बाद में वे छिन गए। वे हिंदू मुस्लिम एकता को भी आवश्यक मानते थे। रवींद्रनाथ ठाकुर ने सही कहा था कि उनके हृदय में हिंदू, मुस्लिम, ईसाई सबके लिए जगह थी।

---

6. संकलित पाठ के आधार पर राजा राममोहन राय के आदर्शों को लिखें। पाठ्यपुस्तक

राजा राममोहन राय के महान आदर्श थे: सत्य का धर्म, सामाजिक समानता और मानव मात्र की एकता। वे मानवीय स्वतंत्रता में विश्वास करते थे। उन्होंने कहा कि जो देश अपने को सत्य कहता है, उसे मानव मात्र की स्वतंत्रता और समानता में विश्वास करना चाहिए। वे अंधविश्वास, कुरीतियों और सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध थे, क्योंकि ये मानव की गरिमा को कम करती हैं। वे विश्व प्रेम और सत्य प्रेम को अपनाकर छोटे छोटे मतभेदों को भुलाना चाहते थे। लेकिन दुख की बात है कि जिन आदर्शों के लिए वे जीवन भर संघर्ष करते रहे, वे अब तक प्राप्त नहीं हो सके हैं।

---

7. सहायक पाठ में संकलित 'राजा राममोहन राय' का सारांश अपने शब्दों में लिखें। पाठ्यपुस्तक

राजा राममोहन राय अंधविश्वास और कुरीतियों से ग्रस्त भारतीय जनजीवन को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाले महापुरुष थे। वे भारतीय पुनर्जागरण के प्रभात तारा थे। उन्होंने अनेक भाषाएँ सीखकर हिंदू, इस्लाम और ईसाई धर्म के ग्रंथों का अध्ययन

किया और पाया कि सभी धर्मों में एकेश्वरवाद ही है। समाज सुधारक के रूप में उन्होंने सती प्रथा, बाल विवाह, जाति प्रथा और अस्पृश्यता के विरुद्ध संघर्ष किया। वे हिंदू मुस्लिम एकता और मानवीय स्वतंत्रता में विश्वास करते थे। शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने पाश्चात्य शिक्षा और अंग्रेजी शिक्षा का समर्थन किया तथा हिंदू कॉलेज की स्थापना में सहयोग दिया। 27 सितंबर, सन् 1833 को ब्रिस्टल में उनका निधन हुआ।

---

8. राजा राममोहन राय का जीवन परिचय लिखिए। अतिरिक्त

राजा राममोहन राय का जन्म 22 मई, सन् 1772 को बंगाल के हुगली जिले के राधानगर गाँव में हुआ था। उनके पिता रामकांत राय और माता तारिणी देवी थे। उन्होंने संस्कृत, फारसी, अरबी और अंग्रेजी भाषाएँ सीखीं। सन् 1815 में उन्होंने आत्मीय सभा बनाई और सन् 1828 में ब्रह्म समाज की स्थापना की। सती प्रथा के विरुद्ध उनके संघर्ष से सन् 1829 में इस प्रथा पर रोक लगी। सन् 1817 में हिंदू कॉलेज की स्थापना में उन्होंने सहयोग दिया और सन् 1821 में संवाद कौमुदी पत्र निकाला। सन् 1830 में वे मुगल बादशाह के दूत बनकर इंग्लैंड गए, जहाँ 27 सितंबर, सन् 1833 को ब्रिस्टल में उनका निधन हुआ।

---

9. सती प्रथा के विरुद्ध राजा राममोहन राय के संघर्ष का वर्णन करें। अतिरिक्त

सती प्रथा में पति की मृत्यु के बाद पत्नी को उसकी चिता पर जला दिया जाता था। यह एक क्रूर प्रथा थी। राजा राममोहन राय ने इस प्रथा के विरुद्ध लंबा संघर्ष किया। उन्होंने शास्त्रों के आधार पर सिद्ध किया कि सती प्रथा धर्म के अनुसार सही नहीं है। उन्होंने इस प्रथा के विरुद्ध लेख लिखे और लोगों को जागरूक किया। उनके प्रयासों से सन् 1829 में तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड विलियम बेंटिक ने सती प्रथा पर रोक लगा दी। यह राममोहन राय की सबसे बड़ी समाज सुधार उपलब्धि मानी जाती है।

---

bihareducation.org

10. ब्रह्म समाज की स्थापना और उसके उद्देश्य लिखिए। अतिरिक्त

ब्रह्म समाज की स्थापना 20 अगस्त, सन् 1828 को राजा राममोहन राय ने की थी। इससे पहले सन् 1815 में उन्होंने आत्मीय सभा बनाई थी। ब्रह्म समाज का मुख्य उद्देश्य एक ईश्वर की उपासना था। इसमें मूर्तिपूजा का विरोध किया गया और कहा गया कि ईश्वर एक है, निराकार है और सर्वोपरि है। ब्रह्म समाज का उद्देश्य समाज सुधार भी था: सती प्रथा, बाल विवाह और जाति भेद का विरोध तथा स्त्री शिक्षा और विधवा विवाह का समर्थन। ब्रह्म समाज ने भारतीय समाज में नई चेतना जगाई।

---

11. राजा राममोहन राय शिक्षा के क्षेत्र में क्या योगदान दिया? अतिरिक्त

राजा राममोहन राय शिक्षा के क्षेत्र में महान योगदान दिया। वे पाश्चात्य शिक्षा और अंग्रेजी शिक्षा को भारत के विकास के लिए आवश्यक मानते थे। सन् 1817 में कलकत्ता में हिंदू कॉलेज की स्थापना में उन्होंने सहयोग दिया। वे स्त्री शिक्षा के समर्थक थे और मानते थे कि नारियों को भी पुरुषों के समान शिक्षा का अधिकार मिलना चाहिए। उन्होंने संवाद कौमुदी पत्र निकालकर लोगों में जागरूकता फैलाई। वे चाहते थे कि भारतीय आधुनिक विज्ञान और तर्क की शिक्षा प्राप्त करें, ताकि अंधविश्वास दूर हो और देश प्रगति करे।

---

12. राजा राममोहन राय को भारतीय पुनर्जागरण का प्रभात तारा क्यों कहा जाता है? अतिरिक्त

राजा राममोहन राय को भारतीय पुनर्जागरण का प्रभात तारा इसलिए कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने सबसे पहले भारतीय समाज में नई चेतना जगाई। उस समय समाज अंधविश्वास, सती प्रथा, जाति भेद और छुआछूत से ग्रस्त था। राममोहन राय ने इन कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाई और एकेश्वरवाद, मानव समानता तथा मानवीय स्वतंत्रता का संदेश दिया। उन्होंने शिक्षा,

पत्रकारिता और समाज सुधार के माध्यम से भारत को आधुनिकता की ओर ले जाने का कार्य किया। जैसे प्रभात का तारा सुबह का संदेश देता है, वैसे ही राममोहन राय ने भारत के नए युग का संदेश दिया।

---

13. रवींद्रनाथ ठाकुर ने राजा राममोहन राय के बारे में क्या कहा था? स्पष्ट करें। पाठ्यपुस्तक

रवींद्रनाथ ठाकुर ने राजा राममोहन राय के बारे में कहा था कि उनके हृदय में हिंदू, मुस्लिम, ईसाई आदि सबके लिए जगह थी। वस्तुतः उनकी आत्मा भारत की आत्मा थी। इसका अर्थ है कि राममोहन राय किसी एक धर्म या संप्रदाय तक सीमित नहीं थे। उन्होंने सभी धर्मों के ग्रंथों का अध्ययन किया और सबमें एक ही सत्य पाया। वे हिंदू मुस्लिम एकता को भारत की आजादी के लिए आवश्यक मानते थे। उनका हृदय सबके लिए खुला था। इसलिए ठाकुर ने उन्हें भारत की आत्मा कहा।

---

14. राजा राममोहन राय के अनुसार जाति भेद हमारी गुलामी का कारण कैसे रहा? पाठ्यपुस्तक

राजा राममोहन राय के अनुसार जाति भेद, जिससे हिंदू समाज अनेक जाति उपजाति में बँट गया है, हमारी गुलामी का प्रमुख कारण रहा है। जब समाज छोटी छोटी जातियों में बँटा रहता है तो उसमें एकता नहीं रहती। एकता के अभाव में ही हम दासता की जंजीर में जकड़े रहे। जाति भेद और छुआछूत ने मानवता को बाँट दिया और समाज को कमजोर कर दिया। इसलिए राममोहन राय ने जाति भेद को मानवता का महान शत्रु बताया और मानव मात्र की एकता का संदेश दिया।

---

15. राजा राममोहन राय और स्वामी दयानंद के सुधार कार्यों की तुलना करें। अतिरिक्त

राजा राममोहन राय और स्वामी दयानंद दोनों ही महान समाज सुधारक थे। दोनों ने मूर्तिपूजा और जाति भेद का विरोध किया। दोनों एक ईश्वर में विश्वास करते थे। दोनों ने स्त्री शिक्षा और विधवा विवाह का समर्थन किया। दोनों ने अंधविश्वास के विरुद्ध तर्क का संदेश दिया। अंतर यह था कि राममोहन राय ने उपनिषदों और पाश्चात्य शिक्षा पर बल दिया, जबकि दयानंद ने वेदों पर बल दिया। राममोहन राय ने ब्रह्म समाज बनाया और दयानंद ने आर्य समाज। दोनों को आधुनिक भारत का निर्माता कहा जाता है।

birlaeducation.org

---

16. राजा राममोहन राय के विचारों की आज के समय में प्रासंगिकता बताइए। अतिरिक्त

राजा राममोहन राय के विचार आज भी प्रासंगिक हैं। आज भी समाज में जाति भेद, छुआछूत और स्त्रियों के प्रति भेदभाव देखने को मिलता है। उनका संदेश मानव मात्र की समानता और मानवीय स्वतंत्रता आज भी उतना ही महत्वपूर्ण है। उनका सत्य का धर्म, सामाजिक समानता और मानव मात्र की एकता का आदर्श आज भी पूरा नहीं हुआ है। उनकी शिक्षा कि धर्म के नाम पर विवाद नहीं होना चाहिए, आज भी समाज में शांति के लिए जरूरी है। हिंदू मुस्लिम एकता का उनका संदेश आज भी भारत की एकता के लिए महत्वपूर्ण है।

---

17. राजा राममोहन राय के इंग्लैंड जाने का उद्देश्य क्या था? अतिरिक्त

राजा राममोहन राय सन् 1830 में मुगल बादशाह अकबर द्वितीय के दूत बनकर इंग्लैंड गए थे। बादशाह ने उन्हें 'राजा' की उपाधि दी थी। इंग्लैंड में वे भारतवासियों के कल्याण के कार्य में लगे रहे। वे वहाँ भारत की समस्याओं और भारतीयों के अधिकारों की बात ब्रिटिश सरकार तक पहुँचाना चाहते थे। दुर्भाग्य से इंग्लैंड में ही 27 सितंबर, सन् 1833 को ब्रिस्टल में उनका निधन हो गया।

---

18. आत्मीय सभा क्या थी? अतिरिक्त

आत्मीय सभा की स्थापना राजा राममोहन राय ने सन् 1815 में कलकत्ता में की थी। यह एक छोटी सभा थी, जहाँ उनके मित्र और विद्वान एकत्र होकर धर्म और समाज के विषयों पर चर्चा करते थे। इसमें एकेश्वरवाद, मूर्तिपूजा का विरोध और समाज सुधार

पर विचार होता था। यही सभा आगे चलकर ब्रह्म समाज का आधार बनी। सन् 1828 में ब्रह्म समाज की स्थापना इसी विचारधारा को आगे बढ़ाने के लिए हुई।

---

19. राजा राममोहन राय ने किन कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष किया? पाठ्यपुस्तक

राजा राममोहन राय ने सती प्रथा, बाल विवाह, जाति प्रथा, अस्पृश्यता और अंधविश्वास जैसी कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष किया। सती प्रथा के विरुद्ध उनके संघर्ष से सन् 1829 में इस प्रथा पर रोक लगी। उन्होंने जाति भेद को मानवता का महान शत्रु बताया। उन्होंने कहा कि अंधविश्वास, कुरीतियाँ और सामाजिक बुराइयाँ मानव की गरिमा को कम करती हैं। वे स्त्रियों के अधिकारों के भी पक्षधर थे और विधवा विवाह तथा स्त्री शिक्षा का समर्थन करते थे।

---

20. हिंदू कॉलेज की स्थापना में राजा राममोहन राय की क्या भूमिका थी? अतिरिक्त

हिंदू कॉलेज की स्थापना सन् 1817 में कलकत्ता में हुई थी। राजा राममोहन राय ने इसकी स्थापना में सहयोग दिया था। वे पाश्चात्य शिक्षा और अंग्रेजी शिक्षा को भारत के विकास के लिए आवश्यक मानते थे। हिंदू कॉलेज में भारतीय विद्यार्थियों को अंग्रेजी और आधुनिक विषयों की शिक्षा दी जाती थी। इस कॉलेज से भारतीयों में नई चेतना जगी और आधुनिक शिक्षा का प्रसार हुआ। यही कॉलेज आगे चलकर प्रेसिडेंसी कॉलेज बना।

---

birlaeducation.org